IARJSET

ISSN (Online) 2393-8021
ISSN (Print) 2394-1588

International Advanced Research Journal in Science, Engineering and Technology

Vol. 5, Issue 12, December 2018

आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका

सुधा कुमारी

शोध छात्रा-अर्थशास्त्र विभाग जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा सारण

सारांश: महिला सशक्तिकरण विकासशील देशों में एक अत्यंत महत्वपूर्ण मुद्दा है। यद्यपि महिलाएँ प्रत्येक समाज का अभिन्न अंग हैं, फिर भी आर्थिक गतिविधियों में उनकी सक्रिय भागीदारी के बावजूद निर्णय-निर्माण में उनकी भूमिका सीमित बनी हुई है। महिला सशक्तिकरण और आर्थिक विकास एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। एक ओर, केवल विकास ही महिलाओं और पुरुषों के बीच असमानता को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है; दूसरी ओर, महिला सशक्तिकरण विकास में योगदान दे सकता है। विकास को ऐसी अवस्था के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसमें चीज़ों में सुधार हो रहा हो। हालांकि, इसकी परिभाषा विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक, जैविक, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, भाषा और साहित्य में अलग-अलग होती है। सामाजिक-आर्थिक संदर्भ में, विकास का अर्थ बेहतर शिक्षा, आय, कौशल विकास और रोजगार के माध्यम से लोगों की जीवनशैली में सुधार करना है। यह सांस्कृतिक और पर्यावरणीय कारकों पर आधारित आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन की एक प्रक्रिया है। आर्थिक विकास से तात्पर्य देशों या क्षेत्रों की आर्थिक समृद्धि में ऐसी वृद्धि से है जो वहाँ के निवासियों के कल्याण के लिए हो। आर्थिक वृद्धि को अक्सर आर्थिक विकास के स्तर का एक संकेतक माना जाता है। आर्थिक वृद्धि शब्द का अर्थ वास्तविक राष्ट्रीय आय, सकल घरेलू उत्पाद (ळक्च्) या प्रति व्यक्ति आय जैसे विशिष्ट मापदंडों में वृद्धि (या बढ़ोतरी) से है। दूसरी ओर, "आर्थिक विकास" का दायरा कहीं अधिक व्यापक है। यह वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से कोई राष्ट्र अपने लोगों के आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक कल्याण में सुधार करता है। सामाजिक विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक संस्थाओं में इस प्रकार परिवर्तन होते हैं कि समाज की अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने की क्षमता बढ़ जाती है। इसका संबंध समाज के स्वयं को संगठित करने और अपनी गतिविधियों का संचालन करने के तरीके में गुणात्मक परिवर्तनों से है, जैसे जनसंख्या में अधिक प्रगतिशील दृष्टिकोण और व्यवहार अपनाना, अधिक प्रभावी प्रक्रियाओं को लागू करना, या अधिक उन्नत प्रौद्योगिकी का उपयोग करना। जैसा कि नीचे दिए गए चित्रण में देखा जा सकता है, पर्यावरण, जीवनशैली और प्रौद्योगिकी के बीच घनिष्ठ संबंध है।

मुख्य शब्द: महिला सशक्तिकरण, सामाजिक, राजनीतिक, जैविक, विज्ञान, बेहतर शिक्षा, कौशल, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय, आर्थिक वृद्धि आदि।

शोध प्रविधि

इस शोध पत्र में आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका विषय पर विश्लेषणात्मक अध्ययन के आधार पर प्राथमिक और द्वितीय स्रोतों के माध्यम से अध्ययन किया गया है। इसके साथ-साथ पुस्तकालय मंे उपलब्ध ग्रन्थों और पत्र-पत्रिकाओं, विद्वानों का मार्गदर्शन, साक्षात्कार के माध्यम से शोध पत्र मंे समाहित किया गया है।

समस्या

ऽ महिलाआंे के विकास की सबसे बड़ी समस्या आर्थिक पिछड़ापन है।
ऽ आर्थिक विकास में कार्यान्वयन की विविध कमियाँ है।
ऽ महिलाओं में राजनीतिक इच्छाशक्ति का अभाव सदियों से रहा है।
ऽ निर्वाह कृषि में मुख्य रूप से पारिवारिक श्रमिक के रूप में महिलाओं की अवैतनिक भूमिका रही है।
ऽ निम्न स्तर की प्रौद्योगिकी और पारंपरिक कृषि पद्धतियों का अभाव रहा है।
ऽ महिलाओं के आर्थिक विकास में ऋण और विपणन नेटवर्क तक सीमित की पहुँच का होना।
ऽ सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएँ, जैसे घरेलू कार्यों की जिम्मेदारी, आवागमन पर प्रतिबंध आदि।

इन बाधाओं को दूर करके, आर्थिक विकास की अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की भूमिका को बढ़ावा देते हुए देश और वैश्विक अर्थव्यवस्था दोनों समृद्ध हो सकते हैं।

उद्देश्य

महिलाओं में आर्थिक विकास, सामाजिक, मानव केन्द्रित और सतत विकास इन चार अवधारणाओं से संबंधित महत्वपूर्ण मुद्दों के विभिन्न पहलुओं का परीक्षण किया जाना चाहिए। इन अवधारणाओं की समझ के आधार पर, अब हम भारत में हो रहे महिलाओं के आर्थिक विकास के साथ-साथ, सामाजिक-आर्थिक विकास को समझने का प्रयास करें। यद्यपि देश की स्वतंत्रता के समय से ही उसके विकास

Copyright to IARJSET
DOI 10.17148/IARJSET.2018.51210

IARJSET

ISSN (Online) 2393-8021
ISSN (Print) 2394-1588

International Advanced Research Journal in Science, Engineering and Technology

Vol. 5, Issue 12, December 2018

के लिए अनेक प्रयास किए गए हैं, फिर भी 1990 के बाद से भारत विकासशील विश्व की सबसे तेज़ी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में उभरा है। इससे स्पष्ट है कि बाज़ार विनिमय दरों के आधार पर भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की बारहवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, और क्रय शक्ति समता के आधार पर निर्धारित किए गए मापदण्डों के अनुसार यह विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है।

समाधान

आर्थिक विकास में महिलाओं को सशक्त बनाने के सामाजिक लाभ भी हैं। महिलाएँ अपनी आय का 90 प्रतिशत अपने परिवारों पर खर्च करती हैं, और आर्थिक रूप से सशक्त महिलाएँ माँग बढ़ाती हैं, अधिक स्वस्थ और बेहतर शिक्षित बच्चों का पालन-पोषण करती हैं तथा मानव विकास के स्तर को ऊँचा उठाती हैं। महिलाओं की आर्थिक भागीदारी कृषि उत्पादकता को बढ़ाती है, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के स्तर पर उद्यम विकास को प्रोत्साहित करती है, तथा व्यवसाय प्रबंधन और निवेश पर प्रतिफल में सुधार करती है। सामाजिक मानदंडों और अपेक्षाओं में परिवर्तन आया है, जिससे महिलाओं को कौशल विकास के क्षेत्र में कार्य करने की आवश्यकता महत्वपूर्ण हो जाती है। इससे उन पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं को तोड़ने का अवसर मिला है जो पहले समाज में उनके स्थान को परिभाषित करती थीं। अब महिलाओं को पुरुषों के समान माना जाता है, और समाज में उनके योगदान को मान्यता और महत्व दिया जा रहा है। वर्तमान में महिलाएँ ळक्व् में 18ः का योगदान देती हैं; हालांकि, यदि महिलाओं को केवल समान अवसर प्रदान किए जाने की आवश्यकता है। भारतीय अर्थव्यवस्था में समानता समावेशी विकास और गरीबी उन्मूलन के लिए भी एक पूर्वापेक्षात्मक कार्य किये जा रहे हैं। सशक्त महिलाएँ पूरे परिवार और समुदाय के स्वास्थ्य, शैक्षिक स्थिति और उत्पादकता में अमूल्य योगदान देती हैं, जिससे अगली पीढ़ी की संभावनाएँ भी बेहतर होती हैं। सहस्राब्दी विकास लक्ष्य भी लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण पर विशेष बल देता है। अब यह व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है कि लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण विकास संबंधी परिणामों को प्राप्त करने की मूल आधारशिलाएँ हैं। भारत में महिला सशक्तिकरण की स्थिति और उसके निर्धारकों को ध्यान में रखते हुए, यह असमानताओं के कुछ प्रमुख निर्धारकों को प्रस्तुत करने का प्रयास करता है ताकि यह समझा जा सके कि महिलाओं को आर्थिक विकास के स्तर पर किस सीमा तक सशक्त किया जा सकता है। महिलाओं के आर्थिक विकास के लिए सशक्तिकरण के मुद्दों और चुनौतियों की आवश्यकता है। इससे भारत में महिला सशक्तिकरण की स्थिति का विश्लेषण करने तथा उससे जुड़े मुद्दों और चुनौतियों को उजागर करने का अथक प्रयास किया जा सकता। आज महिला सशक्तिकरण 21वीं सदी की सबसे महत्वपूर्ण चिंताओं में से एक बन गया है। हालांकि, व्यवहार में महिला सशक्तिकरण अभी भी वास्तविकता की अपेक्षा एक भ्रम अधिक रूप में रहा है। अपने दैनिक जीवन में हम देखते हैं कि महिलाएँ विभिन्न सामाजिक बुराइयों की शिकार बनती जा रही है। महिला सशक्तिकरण महिलाओं की संसाधनों तक पहुँच और जीवन से जुड़े रणनीतिक निर्णय लेने की उनकी क्षमता का विस्तार करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। महिलाओं का सशक्तिकरण मूलतः उन महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्थिति में सुधार की प्रक्रिया है जो परंपरागत रूप से समाज में वंचित रही हैं। यह उन्हें सभी प्रकार की हिंसा से संरक्षण प्रदान करने की प्रक्रिया भी है। भारत में महिलाएँ अभी भी अपेक्षाकृत कम सशक्त हैं और उनकी सामाजिक स्थिति पुरुषों की तुलना में निम्न है। इसमें यह भी स्पष्ट हो जाता है। यहाँ तक भारतीय समाज में आर्थिक विकास को लेकर महिलाओं द्वारा असमान लैंगिक मानदंडों को स्वीकार करने की प्रवृत्ति अभी भी समाज में प्रचलित होती चली जा रही है। शिक्षा तक पहुँच, रोजगार और सामाजिक संरचना में परिवर्तन महिला सशक्तिकरण के सक्षमकारी कारक हैं। भारत में महिलाओं की भूमिका विभिन्न कारकों पर निर्भर करती है, जैसे शैक्षिक स्थिति, सामाजिक स्थिति और भौगोलिक स्थान। देश के आर्थिक विकास में महिलाओं की भागीदारी को महिला सशक्तिकरण कहा जाता है। महिला सशक्तिकरण का अर्थ है महिलाओं की प्रगति के साधनों की भागीदारी तक पहुँच और क्षमता में और अधिक वृद्धि करना। इस दृष्टिकोण ने इस मान्यता को मजबूत किया कि महिलाओं की माँगें वैध अधिकार हैं। महिला आंदोलन की सबसे उल्लेखनीय उपलब्धियों में से एक यौन एवं प्रजनन अधिकारों की मान्यता थी। इसी समय, महिलाओं के हिंसा-मुक्त जीवन के अधिकार को भी स्वीकार किया गया, और महिलाओं के विरुद्ध हिंसा की समझ घरेलू हिंसा से बढ़कर ष्लैंगिक-आधारित हिंसाष् तक विस्तृत हुई। इस अवधि में विकास को केवल आर्थिक विकास के बजाय व्यापक सामाजिक विकास के रूप में भी समझा जाने लगा, यद्यपि आर्थिक वृद्धि अभी भी प्रमुख प्रेरक शक्ति बनी रही। महिलाओं के अधिकार, विशेष रूप से यौन और प्रजनन स्वास्थ्य अधिकार, अभी तक सार्वभौमिक रूप से अधिकारों के रूप में मान्यता प्राप्त नहीं कर सके हैं, और महिलाओं के विरुद्ध हिंसा आज भी विश्वभर में व्यापक है। महिलाएँ अभी भी आर्थिक और राजनीतिक जीवन में पूर्ण और समान भागीदारी से वंचित हैं। महिलाओं का पर्याप्त अभी भी अधूरा है, और विकास प्रक्रिया में महिलाओं के समावेशन को निरंतर प्राथमिकता दी जानी चाहिए। महिलाओं को उनकी पूर्ण क्षमता का उपयोग करने के अवसर से वंचित करना मानव संसाधनों की बर्बादी और आर्थिक प्रगति में बाधा पहुँचाना है। जब हम एक महिला को शिक्षित और सशक्त बनाते हैं, तो इसका सकारात्मक प्रभाव उसके परिवार और पूरे समुदाय के जीवन पर गहराई से पड़ता है। इस प्रकार से भारतीय समाज में महिलाओं को आर्थिक विकास में सशक्तिकरण की आवश्यकता है। शिक्षा जीवन में प्रगति की एक आवश्यक नींव है। यह महिलाओं को ज्ञान, कौशल और आत्मविश्वास प्रदान करती है। विकास प्रक्रिया में पूर्ण भागीदारी के लिए शिक्षा आवश्यक है। यह महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक बनाती है और उन्हें उन अधिकारों का उपयोग करने का आत्मविश्वास देती है। महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण पहलू लैंगिक समानता को बढ़ावा देना है। आज महिलाएँ अनेक सामाजिक चुनौतियों का सामना करती हैं। महिलाओं के स्वामित्व और प्रबंधन वाली सतत आजीविकाओं के माध्यम से बेहतर भौतिक जीवन स्तर सुनिश्चित करना। आर्थिक विकास और महिलाओं के कानूनी अधिकारों के बीच गहरा संबंध है। आर्थिक विकास और महिला सशक्तिकरण का द्विपक्षीय संबंध है, जिसमें महिलाओं के समय की

Copyright to IARJSET
DOI 10.17148/IARJSET.2018.51210

IARJSET

ISSN (Online) 2393-8021
ISSN (Print) 2394-1588

International Advanced Research Journal in Science, Engineering and Technology

Vol. 5, Issue 12, December 2018

बचत उनकी क्षमताओं को बढ़ाती है। भारतीय अर्थव्यवस्था में महिलाओं के योगदान का न तो उचित मूल्यांकन किया गया है और न ही नीति-निर्माताओं को देश के आर्थिक विकास में महिलाओं के महत्व की पर्याप्त समझ है। राजनीति में महिलाओं की उपस्थिति राजनीतिक निर्णय-निर्माण और शासन में उनकी भागीदारी को बढ़ावा देती है। भारत में महिलाएँ वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में संलग्न होने के साथ-साथ पत्नी और माँ के रूप में घरेलू जिम्मेदारियों का दोहरा दायित्व भी निभाती हैं, फिर भी आर्थिक विकास में उनके योगदान की उपेक्षा की गई है। महिलाओं को खराब स्वास्थ्य, कुपोषण, बार-बार गर्भधारण और शिक्षा की कमी जैसी प्रमुख चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। यदि आर्थिक विकास में महिलाओं की भागीदारी बढ़ानी है, तो उन्हें आय-सृजन गतिविधियों का प्रशिक्षण, कम ब्याज वाले ऋणों तक आसान पहुँच तथा अत्यधिक प्रसव को सीमित करने के लिए परिवार नियोजन सेवाएँ उपलब्ध करानी होंगी। भारत तेजी से विकास कर रहा है, लेकिन यह विकास हमेशा समान और समावेशी नहीं रहा है। हमारा विकास अभी भी विकसित हो रहा है, और अनेक गहरी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। देश की सबसे बड़ी चुनौती महिलाओं का सशक्तिकरण है। विश्वभर में बार-बार यह सिद्ध हुआ है कि महिलाओं को शिक्षित और सशक्त बनाना तीव्र सामाजिक-आर्थिक विकास प्राप्त करने का सबसे प्रभावी साधन है। भारतीय महिलाएँ विश्व विकास संकेतक उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार दर्शाते हैं। मातृ मृत्यु दर में कमी, साक्षरता दर में वृद्धि तथा स्वास्थ्य और शिक्षा तक बेहतर पहुँच, लेकिन परिवर्तन की गति अभी भी बहुत धीमी है। वे महिलाओं को बेहतर सामाजिक-आर्थिक अवसर प्रदान करते हैं और अधिक तेज़ तथा न्यायसंगत विकास प्राप्त करते हैं। इससे गरीबी में कमी, पर्यावरणीय स्थिरता, उपभोक्ता विकल्प, नवाचार और विभिन्न क्षेत्रों में बेहतर निर्णय-निर्माण को बढ़ावा मिलता है। आर्थिक विकास और लैंगिक समानता साथ-साथ चलते हैं। महिलाओं के स्वामित्व वाले उद्यमों के सामने मौजूद घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाधाओं को कम करना, उन्हें वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं से जोड़ना तथा व्यापार में उनकी भागीदारी बढ़ाना देश के समावेशी विकास को प्रोत्साहित करेगा। अधिकांश महिला उद्यमी सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम संचालित करती हैं। महिलाओं के स्वामित्व में हैं। फिर भी, प्रत्येक पाँच निर्यातकों में से केवल एक ही महिला-स्वामित्व वाला व्यवसाय है।

निष्कर्ष

महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण अभी भी धीमी और असमान गति से आगे बढ़ रहा है। निर्यात व्यवसायों और अन्य आय-सृजन गतिविधियों में महिलाएँ किसी भी प्रकार से कम सक्षम नहीं हैं; फिर भी उन्हें सूचना, वित्त और प्रौद्योगिकी तक पर्याप्त पहुँच नहीं मिलती। प्रारंभिक बाधाओं को दूर करने के लिए उन्हें अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता है। महिलाएँ इन अवसरों तक पहुँच नहीं बना सकतीं, बल्कि यह है कि उन्हें पुरुषों के समान अवसर सुनिश्चित किए जाने चाहिए। जब महिलाओं को अवसर दिए जाते हैं और वे अपने कौशल तथा ज्ञान का प्रदर्शन करती हैं, तो उनका प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। महिलाएँ किसी भी दृष्टि से कम सक्षम नहीं हैं, लेकिन अपनी क्षमताओं को सिद्ध करने के लिए उन्हें अपने परिवार और समाज से अधिक प्रोत्साहन और अवसरों की आवश्यकता होती है। महिलाओं को उनके सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और कानूनी उत्थान की दिशा में उठाए गए प्रत्येक कदम के संभावित प्रभाव से अवगत कराया जाना चाहिए। महिलाओं का समग्र सशक्तिकरण एक विशाल कार्य है। महिलाओं के प्रति अनादर की संस्कृति को बदलना आसान नहीं होगा। क्रांति एक दिन में परिवर्तन ला सकती है, लेकिन सुधारों में समय लगता है। अर्थव्यवस्था में महिलाओं की विशिष्ट भूमिका है। यदि महिलाएँ आर्थिक रूप से सशक्त बनती हैं, तो उन्हें पहचान और आवाज़ मिलती है। निर्णय-निर्माण में उनकी प्रत्यक्ष भागीदारी और आय-सृजन गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता महिला सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। उद्यमिता और परिवार में आय अर्जित करने वाली सदस्य के रूप में कार्य करना महिलाओं को आर्थिक रूप से सक्रिय बनाता है, जिससे उनकी सामाजिक स्थिति में भी सुधार होता है।

सन्दर्भ

[1]. सिन्हा, डॉ. बी.सी. एवं सिंघई जी.सी., 1992, 'आर्थिक विचारो का इतिहास', सजिल्द नेशलन पब्लिशिंग हाउस, पृष्ठ 436
[2]. शर्मा, कृष्ण कुमार, 2012, महिला कानून एवं मानवाधिकार, अर्जुन पब्लिषिंग हाउस, दिल्ली, पृष्ठ 28
[3]. ओम प्रकाश, 2001, प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, विश्व प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 75
[4]. खिमेसरा, डॉ. ज्ञानचंद एवं पारख, डॉ. विजय, 2000, मुद्रा बैंकिंग एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृष्ठ 65
[5]. भारत की महिलाओं से सम्बन्धित सांख्यकी 2010, राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान 5, सीरी इंस्टीट्यूशनल एरिया, हौज़ खास, नई दिल्ली, पृष्ठ 75

Copyright to IARJSET
DOI 10.17148/IARJSET.2018.51210